शालाभास्कर,

व्याकरण.

लेखक

पंडित् जीवी,

रहेवासी अयोध्या देशना हाल वडोदरा

शहरमां.

सन १९०७

ठे. पांचकुवा—अमदावाद.
श्री सत्यविजय प्रिन्टींग प्रेसमां छपावी
प्रकट कीधो.

किंमत आना ६.

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

[गुजराती कॉपीराइट विभाग]

अनुक्रमांक ૧૯૩૨ वर्गांक

पुस्तकनुं नाम આકાશ[illegible]

विषय નાટક

शालाभास्कर,

व्याकरण.

लेखक

पंडित जीवी.

रहेवासी अयोध्या देशना हाल वडोदरा शहरमां

सन १९०७.

आ पुस्तक सन १८६७ ना २५ मा आक्ट प्रमाणे राज-
ष्टर करी ग्रंन्थकरताए सर्व हक्क स्वाधीन राख्या छे

मळवानो ठेकानो केदारेश्वर ग्रंथकरताने त्यांथी.

किंमत आना ३.

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
...દાવાદ
ગુજરા... ...પીરાઈટ-સંગ્રહ
૧૯૩૨

उपोद्घात.

सद्ग्रहस्थो आनान्हो सरखाग्रन्थ छपावाना मारो हेतु एवो छे के संस्कृत भाषा आ हिन्दुस्ताननी मातृभाषा छे आ भाषा हाल तरत माग जाणवा प्रमाणे. ने जोवा प्रमाणे अपना देश बंधुवो ए भाषानो अभ्यास बहू थोडो करेछे एना कारणो जो हुं लखवा बैसों तो बीजू एक पुस्तक लखवुं पडे परंतु आ ठिकाणे ए विषयनो हु उल्लेख करवा चाहतो नथी.

फक्त आजना विषय वे शद्ध लखी विद्वानोने तथा देशसेवा आमारा ग्रंथथी थायतो करवानो विचारथी छपवीने तैयार कर्‍या छे.

संस्कृत शिखनार बालकोंने सरळ रीते ए भाषानो ज्ञान थाय एवा मारो मळ हेतु छ संस्कृत भाषा सुरू करवाने आजसुधी घणा पुस्तको बाहर पड्या छ परंतु तेमा अडचण एटलीज छ के

मूळ व्याकरणनो अर्थ संस्कृतज भाषामां अथवा इंगरेजी भाषामां लखायलो छे तेथी बाळकोना मगजने एटलोपचाववुं पडेछे के अधवचमाथी विद्यार्थियो संस्कृतना अभ्यास छोडी नाशवामांड छे अने जुनी वचारी मातृ भाषाने रजा आपी हालनी कोईपण

काम चलाऊ भाषानो आश्रय ले छे आ मोटी दीलगी रीनी वात छे. पण सिधांतमा एवो जोइये.

श्लोक.

॥ प्रयोग सिद्धिर्भ धुना यथा भवेत् ॥
॥ तथाच छात्रस्य लघुत्तमः श्रमः ॥
॥ इदंहि वैयाकरण प्रयोजनम् ॥
॥ नचात्म पांडित्य प्रदर्शनेनयत् ॥ १ ॥

अर्थ.

जेथी पदनी सिद्धी संक्षिप्तरिते थाय ने विद्यार्थी नो श्रम पण ओछो थाय व्याकरणनो आ मुख्य प्रयोजन छे एमनथी के पोतानी पंडिताई देखाडवा माटे मूळरीति मुकवुं.

माटे आ एक लघु पुस्तक मूळसंस्कृत ग्रंथोना आधार कायम राखी मूळतत्वो कायम राखीने कट-लाक सुधारा साथे शिक्षण पद्धतमां गुरुनो आश्रय नगर साधारण मगजना विद्यार्थियोने संस्कृत भाषामा प्रवेश थवाने जेटलो बने तेटलो परिश्रम करी आ पुस्तक देशबांधवना सेवामा सादर कर्यो छे आशा छे के प्रजा आश्रय वधारे मळवाथी आ पुस्तकनो बीजो भाग क्रियापद साधन विषय जल्दी छपावी प्रगट करीश.

अथसंज्ञाप्रकरणम्.

हवे अक्षरोनी नामसंज्ञा कहे छे.

अक्षरस्थाननियमानि.

अ क ख ग घ ङ ह	इ च छ ज झ ञ य श	ऋ ट ठ ड ढ ण र ष	ऌ त थ द ध न ल स	उ प फ ब भ म ᳵप	ञ ण न ङ म ं	ए ऐ सं क्ष णि	ओ औ ध्य रा	व	ᳵक	०
कंठः	तालु	मूर्धा	दन्ताः	ओष्ठौ	नासिका	कंठतालु	कंठोष्ठौ	दन्तोष्ठौ	जिह्वामूलीयः	
Gutturals	Palatals	Linguals	Dantals	Labials	Nasals	Gutturals-Palatals	Guttural Labials	Dantal Labials	०	०

१ अ इ उ ऋ ऌसमानाः	एटला स्वरोने समान जानवुं.
२ ए ऐ ओ औ संध्यक्षराणि	एटला स्वरसंधिथी थया ने दीर्घ छे.
३ नामिनोऽ-नाः	अस्वर मुकिने बिजा स्वरो नामि केहे वाय छे.
४ गुणवृद्धीच	इ उ ऋ नी क्रमथी ए ओ अर थाय तेने गुण अ इ उ ऋ नी क्रमथी आ ऐ औ आर थाय तेने वृद्धि कहे छे.
५ अन्त्योपध-ष्टिश्च	छेलो स्वर तथा तेथि छेले जो व्यंजन होय तो बन्नेने अथवा छेला स्वर केवळ-नी; टी संज्ञा थाय छे. ने छेला व्यंजनना पाहिलाना स्वर उपधा केहवाय छे.

अथव्यजनानांप्रत्याहाराः

हवे व्यंजनोनो प्रत्यहार देखाडे छे.

हयवरल, ञणनङम, झढधधभ, जडदगब,

छठथखफ, चटतकप, शषस,

(आटला व्यंजन छे.)

पहिला कहेला स्वरने व्यंजनमाथी जारे बे अक्षर लिधा होय त्यारे तेने प्रत्याहार कहे ने ते बन्ने अक्षरोना वचना बधा अक्षरो आविगया एम जाणवुं. जेम अब प्रत्याहार कहेवाथी अने बना वचना बधा अक्षरो लेवा जोइए एमज हल, हस, इत्यादि समजऊं.

६
कु चु टु तु पुवर्गाः

कुथी कवर्ग चुथी च वर्ग टुथी ट वर्ग तुथी तवर्ग पुथीप वर्ग समजऊं.

आ पांच वर्गो छे.

७
स्पर्शाश्च

क थी म सुधी बधा अक्षरो स्पर्श कहेवाय छे.

८
कार्यायेत्

कार्य ना माटे लावलु अक्षर इत्संज्ञक थाय छे तेनो लोप थाय.

अथस्वर संधिः

बे शब्द एकटा थयाथी तेमना वचने संधि कहे छे.

९
नामिनांयः स्वरे

विधि आश्रितः (सूत्र एटले नियम) इ, उ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, नीक्रमथी य्, व्, र्, अय्, आय्, अव्, आव्, थाय स्वरपर एटले स्वर पाछळ होयतो–विघ्य् आश्रितः

१०
यप्यसोर्द्विः

स्वरथी पछी यम् बे थाय हस पाछळ होय तो पण र बे न थाय ने स्वरथी पछे र् थी परे य प बे थाय

=वि ध घ् य् आश्रितः

११
झपांजबाः

झपना जब थाय झभपरे.

विन्ध्याश्रितः सिद्धं.

१ (स्वरहीन अक्षर पाछळना अक्षरमां

जोडथूं पुरी आगतः पु र् य् आगतः= पुर्य्यागतः (मधु अग्नि= मध्व् अग्नि= मन्ध्वग्नि कर्तृ अन्वेषणम्= कर्तुर् अन्वेषण कर्त्रन्वेषणम् ते आरुहंति= तयारुहंति.

१२
पदान्तेऽया·
न्वा

पदान्तना अय्, आय्, अव्, आव्, नीयव्नो विकल्पथी लोपश थाय ते आरुह·न्ति, नद्यै अर्चनं= नद्यायर्चनं+ नद्यार्चनं.

१३
अयोभ्यां

पदान्तनी एओथी पाछळ अनो लोप थाय गंगे अद्य=गंगेऽद्य.

भानो अव=भानोऽव.

१४
गुणवृद्ध्यतः

अवर्णथी पछी इ उ ऋ ए ऐ ओ औ होय तो बेउ मळीने क्रमथी ए ओ अर

---

१ लोप, लोपश्, लुक्थी कार्य एकज थाय छे पण ने लोपशनेलुक छतां कार्य थतुं नथी १ रेफ (र्) व्यंजन ना माथापर चढे छे ने स्वरमां मळिजाय.

ए औ थाय ज्ञान इदं=ज्ञानेदं योग उन्नतिः =योगोन्नतिः विद्याऋद्धिः=विद्यर्द्धिः विश्व-एक कर्तृकः=विश्वैक कर्त्तृकः धन ऐश्वर्य= धनैश्वर्यं सार ओदनः=सारौदनः विश्व औषधं=विश्वौषधं.

१८
दीर्घःसवर्णे

अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवा दीर्घ बे भेगा होय त्यारे बेऊ मळिने दीर्घ थाय धन अर्थी धनार्थी हरि इव=हरीव नदी ईड्या=नदीड्या वायु ऊहा=वायूहा कर्तृ ऋत=कर्तॄते.

१९
गवांदेश्च

गवेंद्रादिक शब्द मा अलगाढी ने संधि करवी तेमच हलीषा आदिक शब्दनी टी लोपकरी ने संधि करवी=गो अइंद्रः गोएन्द्रः=गवेन्द्रः गो अक्षः गो आक्षः गवाक्षः, गवाग्रंगवाजिनं स्वैरिणी अक्षौहिणी प्रौढा एटला गवेंद्रादिक छे.

ने हल ईषा=हल् ईषा=हलीषा मनस् ईषा=मन् ईषा=मनीषा लांगल ईषा= लांगलीषा, अद्योम् सकंधुःकर्कंधुः सीमंतः

कुलश पतंजलिः सारंगः एटला हलीपादीक शब्द छे.

१७
स्वयाम्ब्रा

ई, ऊ, ए, ज्यारे द्विवचन मा होय त्यारे संधि न थाय तथा ऋ समान स्वरथी पछी होय तो संधि विकल्पथी थाय छे तेमच अदस् शब्दनु अमी शब्दनी संधी नथी थती.

इतिस्वर संधिः

अथ व्यंजन संधिः

१८
चपानाम्न-
माः

चपना जब थाय अब परे पदान्तमा तथा ञमपण विकल्पथी थाय ञमपरे. वाक बंधः=वाग्बंधः तत् मातृकः=तन्मातृकः+तद्मातृकः अप्मानं=अम्मानं.

१९
छशः

च प थी पाछल शनी छ थाय विकल्पथी तत् शकः=तत्छकः=

२०
स्तोः श्चुना श्चुः

स्, तवर्गनुं श्, चवर्ग साथे योग थवाथी स्, श् थायछे, तवर्ग चवर्ग थाय पण शनी पछी तवर्गनो चवर्ग न थाय = तच्छत्रः तन् हसति =

२१
झयो होऽन्यतरस्याम्

हनी चथी पाछळ झ, ट्थी पाछळ ढ तथी पाछळ ध, कथी पाछळ घ, ने पथी पछी भ थायछे. तन् हसति = तद्धसति वाच् हानिः = वा वाग्घानिः सम्राट् हसति = सम्राड्ढसति तत् हरिः = तद्धरिः दिक् हीरकं दिग्घीरकं ककुप् हस्ती = ककुब्भस्ती. तत्टंकणं.

२२
ष्टुना ष्टुः

स, तवर्गनु ष टवर्ग साथे योग थवाथी स् ष ने तवर्ग टवर्ग थाय छे = पण त वर्गथी पछी ष आव्याथी तवर्गनो टवर्ग थाय नही तेमज पदांतमा योग होय तो पण आसूत्र लागे नही = तट्टंकणम्.

पट्नरः=पण्नरः

२३
छतेनश्च

नांत पदनी न कारनो नस् आदेश (रुपांतर) थाय छत परे.

वदन्तरणं=वदन्स्तरणं, राजन् चित्रं= राजन्श्चित्रं.

२४
ङ् ण् नांद्वि- र्वा

ह्रस्व स्वरथी पछी पदान्तनीङ्णन् बे थाय स्वरपरे तथा स्वरनी पाछळ छ्पण बे थाय, लिखन् एति=लिखंन्नेति, सम्यङ् इदं=सम्यङ्ङिदं, सुगण् ईशः=सुगण्णीशः तव छत्रं=तवछ्छत्रं.

२५
झसांखसे

झसना चप थाय खसपरे=तवछ्छत्रं= तवच्छत्रं, म्ले[१] छः= म्लेच्छः

२६
मोत्वापदान्ते

म नो अनुस्वार थाय हसपरे पण पदान्तमा विकल्पथी थाय तम् हसति = तंहसति, देवम् = देवं+देवम्

२७
लिलः

त वर्गनो ल थाय ल परे
भगवत् लोकम् = भगवल्लोकम्

---

१ कच्चिद्दर्शित.

२८ नश्च — न् नी अनुस्वार थाय झमपरे पदान्तमा न थाय पयःन् सि = पयांसि

२९ पंचोस्यवा — अनुस्वारनी ङ थाय क वर्ग परे ञ् थाय च वर्ग परे ण् थाय ट वर्ग परे न् थाय त वर्ग परे ने म् थाय प वर्ग परे ने कोइ पण अक्षर पाछळ होय तो तेच अक्षर अनुस्वारनु थाय ज्यारे वर्ग क्रम न होय विकल्पथी

तं करोति = तङ्करोति+तंकरोति
नृपं जयति = नृपञ्जयति.
तं तनोति = तन्तनोति.
पुत्रं पाति = पुत्रम्पाति.
क्षौद्रं लिहति = क्षौद्रँल्लिहति.[1]
देवं यजति = देवँय्यजति.

मः — अनुस्वारनी म थाय स्वरपरे ओदनं अत्ति = ओदनमत्ति.

इति व्यंजन संधिः

१ यवलनो उच्चार सानुनासिकपण थाय.

अथ विसर्ग संधिः

३१ विसर्गस्य वासः

विसर्गनी स् थाय खस परे पण शषस परे विकल्पथी थाय. देवः तत्र = देवस्तत्र, वायुःसरति = वायुस्सरति वायुः सरति.

३२ नामिनोऽत्युर्हबे

अनी पाछळ विसर्गनी उ थाय हब अथवा अपरे, तथा नामिना पाछळ विसर्ग होय तो र् थाय अब परे बलः जानाति = बलोजानाति रामःअटति = रामोअटति (सू० १३ 'अयोभ्यां') = रामोऽटति अग्निः दहति = अग्निर्दहति

३३ लोपश्च

अ वर्णनी पाछळ विसर्गनो लोप श्रु थाय अ ब परे कृष्णः आयाति = कृष्ण आयाति, गंगाः गच्छंति = गंगा गच्छंति

३४ रोरि

बे र् माथी पहिला र् नो लोप थाय ने तेनो पहिलानो स्वर दीर्घ थाय हरि:रक्षति = हरीरक्षति,

३५ सैषाढ्से

सः तथा एषः शब्दनी विसर्गनो लोपश् थाय हस परे सःगच्छति = सगच्छति एषःवदति = एषवदति

इति विसर्ग संधिः

अथ स्वरान्तपुल्लिंगाः

संस्कृत व्याकरणमां सात विभक्तियो[1] छे ते नाममां लगाडवाथी तेनी कर्ता कर्म करण इत्यादी स्थिती बताडे छे ते इंग्लीषमा एम समजवूं

---

[1] These are seven cases of the nown.

	Singular. एकवचन.	Dual. द्विवचन.	Plural. बहुवचन.
Namnative	प्रथमा = सि*	औ	जस्
Objective	द्वितीया = अम्	औ	शस्
Instrumental	तृतीया = टा	भ्याम्	भिस्
Dative	चतुर्थी = ङे	भ्याम्	भ्यस्
Ablative	पंचमी. = ङसि	भ्याम्	भ्यस्
Passessive	षष्टी. = ङस्	ओस्	आम्
Locative	सप्तमी = ङि	ओस्	सुप्
Vocative	संबोधन[१] = सि	औ	जस्

* आ ध्यानमां राखवुं के, सिनीइ जस्नी ज्, शस्नी श्, ने टानीट्, ने ङे, ङसि, ङस्, ङिनी ङ सुप् नीप् काढी नाकवो जोइये (ते कार्यनाम देछे.

१ एनो एकवचनमांज फेरफार थायछे.

रामसि=रामस्.

३६ स्रोर्विसर्गः

स्र्नी विसर्ग थाय रस परे तथा पदान्तमां =रामः राम औ (सू. १४ गुणवृद्ध्यतः) =रामौ राम अस् (सू. १५ दीर्घःसवर्णे) =रामाः राम अम्

३७ अमशसो रस्य

समानस्वरनी पाछळ अम् शस्नी अलोप थाय=रामं, रामौ राम शस्=राम अस्.

३८ सामनामौ-वा

समान स्वरनो पाछळ शस् नी स्नी न् थाय तथा आम्नी नाम् थाय पण स्त्रीलिंगमां स्नी न न थाय = रामन् =

३९ ह्रसोर्वा

पहिलानो स्वर दीर्घ थाय नाम तथा शस्परे = रामान्[१].

रामटा.

---

१ अक्षर रूपान्तर छतां पण पहिलाज रूप मानीने कार्य थायछे.

४०
टेननावा

अनी पाछळ टाइन थाय तथा इ उ थी पाछळ टा ना थाय स्त्रीलिंगमां नथाय= राम इन (सू १४)= रामेन.

४१
ष्रुर्नोणोऽ नन्तेच

ष् र् ऋ थी पाछळ न् ण् थाय ते बेवूने वचमां अव प्रत्याहारकवंग पवर्ग होय तो पण थाय तथा नमादिक धातुना = पहिला जोप्रादिक उपसर्ग र् ष् ऋ वाली होय तो पण नामादिकनी न् ण् थाय पदान्तमा न थाय रामेण राम भ्याम्.

४२
भ्येरास् भोश्च

अ नी पाछळ मि ए थाय तथा अ दीर्घ थाय म प रे पण अ ए थाय बहुवचननी समपरे = रामाभ्यां

राम भिम् = रामैः

रामङे

४३
ङ्यामया· त्स्याः

अथी पाछळ ङे. ङसि ङस् नी क्रमथी अय अत् स्य थाय छे = रामाय

रामाभ्याम् रामेभ्यः, रामात् रामाभ्यां रामेभ्यः, राम ङस् = रामस्य राम ओस्=

४४ टौसोर्बा

अ ए थाय ओसपरे तथा आप् ए थाय टा तथा ओस्परे = रामे ओस् (सू. ९= नामिनांय स्वरे रामयोः राम आम्=रामाणां राम सुप् (मू ४२)= रामेसु.

४५ किलास्सः षश्च

क वर्ग तथा इल प्रत्याहारनी पाछळ जो स होय तो ष थाय तथा प्रादीक उपसर्गना पाछळ स्वादिक धातुवो नी पण स ष थाय निमित्त रहेतां = रामेषु पण शब्दनी स् होय तो न थाय.

४६ संबुद्धौ सिधिश्च

रामासि.

संबोधनमां. ह्रस्व समा

नस्वरनी पाछळ सिधि थाय तथा ते धिनो लोप करवा=हे[1]राभ हे रामौ रामाः

---

१ संबोधनना पहिले हे लगाडवी.

एवं (एवीजरीते) मांस घटपट स्तंभ-
कुंभ इत्यादि शब्दो सिद्ध करवा पण
सर्वादिकमा फेर थाय छे ते आ छे ने आ
सर्वादिक त्रणेलिंगमा थाय छे.

सर्व विश्व उभ उभय अन्य इतर एक
पूर्वपर दक्षिण उत्तर अपर अधरस्वत्यत्
तत् यत् एतत् इदम् अदस् द्वि किं?
संबोधनना पहिल हे लगाडवो.

सर्वसि = सर्वः सर्वऔ = सर्वौ सर्व-
जस् =

४७
जसामोरी
षामो

अकरान्त सर्वादिकनी पाछळ जस् तथा
आम्नो क्रमथी ई तथा सांम थाय = सर्वे,

सर्वं सर्वौ सर्वान् सर्वटा = सर्वेण सर्वा-
भ्याम् सर्वैः = सर्व ङे

४८
ङ्यांस्मा-
यश्च

अकारान्त सर्वादिकनी पाछळ ङे ङ
सि ङि नी क्रमथी स्मै स्मात् स्मिन्
थाय = सर्वस्मै सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः सर्व-
स्मात् सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः सर्वस्य सर्वयोः

सर्वेषां सर्वास्मिन् सर्वयोःसर्वेषु हे सर्व हेसर्वौ हे सर्वे

एवीज रीते एक शब्द सुधि रुपोसिद्ध करवा ने पूर्वादिक आठ शब्द राम शब्द जेवा पण थाय छे उभ औ = उभौ उभौ उभाभ्यां ३ उभयोः २ हे उभौ¹ उभयसि उभय शब्दनु द्विवचन नथी थतु उभयःउभये उभयम् उभयान् इत्यादि

पूर्वःपूर्वौ पूर्वे पूर्वाःपूर्वम् पूर्वौ पूर्वान् पूर्व ङि=पर्वास्मिन्+पूर्वे इत्यादि सोमपासि = सोमपाःसोमपौ सोमपाःसोमपां सोमपौ सोमपाशस्

४९ आंतोधातोः

धातुनी आकारनो लोप थाय शसा दिस्वरपरे=सोमपः सोमपा सोमपाभ्याम् इत्यादि रवि सि=रविस्=रविःरवि औ

५० औयूवा

इथी तथा आप् थी तथा नपुसकलिंगथी पाछळ औ ई थाय पण उनी पाछळ ऊ थाय=रवी रविजस्

---

¹ उभ शब्द द्वीवजन थाय छे.

५१
ङिज्जसो
रस्यच

इ उ नी क्रमथी ए ओ थाय जस् घि तथा ङित् वचनपरे तथा ए ओ नी पाछळ ङसि ङस् नी अकारनो लोप थाय रवे जस् रवयःरविं रवी रवीन् रविटा (४८ टेननावा) रविणा रविभ्याम् रविभिः रवये रविभ्यां रविभ्यः रविङसि रवेः रविभ्याम् रविभ्यः रवेःरव्योः रवीणां रविङि

५२
ङरामडाच

इ उ नी पाछळ ङि डौ थाय तथा स्त्रि लिंगमा आप् ईप् ने शब्द नी पाछल ङि आम् थाय पण स्त्रि लींगमा इ उ नी पाछळ विकल्पथी ङि आम् थाय=रविडौ

५३
डितिटेः

डीत्[1] पाछळ होय तो टीनो लोपक रवो=रव औ=रवौ रव्योः रविषु रविसि= रविधि=रवे=हेरवे हेरवी हेरवयः

---

१ डित् एटले ड ने इत् करीने काढिनाखवी होय ते

सखि सि[1] पति सि छे सखा सखायौ सखाय: सखायं सखायौ सखीन् सखिटा= सख्या सखिना सखिभ्यां सखिभि: सख्यै सखिभ्य: सख्यु: सख्यु: सख्यो: सखीनां सख्यौ सख्यो: सखिषु हे सखे हे सखायौ पति: पती पतय: पतिं पती पतीन् पत्या त्रितियाथी शबद सुधि सखि शब्द जेवा रूपो थाय छे

५४ त्यदादेष्टेर: स्यादौ

(द्विशब्द[2] द्विवचनज थाय छे) त्यदादिक शब्दनी टि नो अ थाय विभक्तिपरे द्वौ द्वौ द्वाभ्यां द्वयो:

त्रिशब्द बहु वचन छे त्रि जस्

त्रय: त्रीन् त्रिभि: त्रिभ्य: त्रयाणां[4] त्रिषु कति[3] शब्द बहूवचन छे कतिजस् कति कति कतिभि:+भ्य:+इत्यादि.

---

१ सखि पति शब्द निपातथी सिद्ध छे

२ त्यदादीनां संबोधनाभाव:

३ कति शब्दनि धात सिद्ध छे.

८८ य्वोर्ध्वा वु वौ वा

सुश्री सि = सुश्रीः सुश्री औ छे ईउ = य्वोः यव्=य्वौ ईच ऊच उवौ वा इति पदच्छेदः धातुनि ई ऊ नी इय् उव् थाय स्वर परे पण असंयोगादी धातुनि इ, ऊ, य् व् ज थाय स्वर परे सुश्रियौ+ यः+ यं सुश्रीयां सुश्रीणां इत्यादि हे सुश्रीः इ०

सेनानी सि = सेनानीः सेनान्यौ

सेनान्यः+ न्यं+सेन्यः न्या सेनानीभ्यां + भिः सेनान्ये सेनानीभ्यः सेनान्यः सेनान्योः सेनानीनां[1] सेनान्यां सेनानी ङि= (सू ९२) सेनान्यां सेनान्योः सेनानी षु हे सेनानीः+न्यौ+ न्यः एवं ग्रामणी आदी शब्द थाय छे पितृ सिछे

---

१ सेनानी आदि शब्दोमां नुट विकल्पथी थाय आमपरे.

५६
सेरार
ङ्योश्च

ऋ नी पाछळ सिडा थाय ने पितृ आदि शब्दनी ऋनी अरथाप पांच वचन परे तथाधिडिपेर पण कर्तृ स्वसृ नत्पृ नेष्टृ घातृ गोप्त, प्रशास्तृ पोतृ उद्गातृ नेष्टृ त्वष्टृ होतृ आदिकोंनी ऋ आर थाय पांच पचन परे =पिता, पितरौ.+रः =+रं .पितृ शस् (सू, ३९ सु ३८) पितृन् पित्रा पितृभ्यां+भिः पित्रे पितृभ्यः पितृ ङ सि=

५७
ऋतोडुः

ऋ नी पाछळ ङसि ङस्—ना- डुस्थाय पितृडुम् (सू ५१) पितुः पितुः पित्रोः पितृणां पितरि पितृषु हे पितः हे पितरौ + रः = एवं भ्राता भ्रातरौ+रः इ० जामाता जामातरौ+रःइ०

नृासि

१ ना नरौ = रः इ० नृ आम् छे = नृणाम् = नृणाम्

---

१ नृ शद्बने विकल्पथी दीर्घ थाय नाम् परे

नप्ता नप्तारौ = रः इ०

५८ आवौवा

कर्तु सि छे कर्ता कर्तारौ+रः+रं कर्तॄन् कर्त्रा कर्तृभ्यां कर्तृभिः कर्त्रे कर्तृभ्यः कर्तुः कर्तुः कर्त्रोः कर्तॄणां कर्तरि कर्तृषु हे कर्तः हे कर्तारौ+रः

गो। सि छे

ओ नी औ थाय पांच वचनपरे पण औनी आ थाय अमूने शस्परे

गौः गावौ गावः गां गावौ गाः गवा गोभ्यां+भिः गवां गवि गोषु हे गौः गावौ+वः

ग्लौ। सि

ग्लौः ग्लावौ ग्लावः+वं+वः=वा इत्यादि.

इति स्वरान्त पुंलिंगाः

अथस्वरान्त स्त्रीलिंगाः

गंगासि

५९
हसेपः से-
लोपः

हसान्तथी आवंतथी ईवं नथी परेसिनो लोप थाय=गंगा गंगा औ (५०औयूवा) = गंगे गंगाजस् = गंगाः गंगां गंगे गंगाः गंगाटा (४३ टौ सोर्वा गंग् ए आ = गंगया गंगाभ्यां गंगाभिः= गंगाङे

६०
ङितांयाटौ
वा

आपनां पाछळ ङि त् वचनोने य ट् नो आगम थाय ने ई, ऊ थी पाछळ ङि त वचनोने अ ट नो अगम थाय अने इ उ थी पाछळ ङि त वचनोने अट ना आगम विकल्पथी थाय स्त्रि लिंगमा गंगायए=

गंगायै गंगाभ्यां गंगाभ्यः गंगा ङ सि= गंगायाः गंगाभ्यां गंगाभ्यः गंगायाः गंग-योः गंगानाम् गंगा ङि (५२ गंगायां गंगयो = गंगासु

६१
ऱ्हस्वोवा

असंयोगादि धातुनी ई ऊ तथा स्त्री शद्बनी ई नो ऱ्हस्व थाय ।घिपरे तथा

आप ए थाय धिना सहित तथा अम्बा-
दिक ऱ्हस्व थाय. धिपरे

हे गंगे हे गंग. हेगंगाः एवं (एवीज
रीते श्रद्धा, मेधा, विद्या, शाला, माला,
हेला, दोला इत्यादि०

अंबा धि=हेअम्ब हे अक्क हे अक्क
सर्वादिक शब्द त्रनो लिंगमां थाय छे तथी
स्त्रिलिंगमा पण आव्या (सर्वासि

६२
आपवतः
स्त्रियां

स्त्रि लिंगमां अकारान्त शब्दने आप
लगाडीने सिद्ध करवू सर्वासि सर्वा सर्वे
सर्वाः सर्वा सर्वे सर्वाः सर्वया सर्वाभ्यां,
सर्वाभिः सर्वाङः = सर्वायै.

६३
यटोच्च.

आप अन्तवाले सर्वादिकनी पाछळ यटने
सुटनु आगम थाय तथा आप अथाय =
सर्वापै सर्वाभ्यां सर्वाभ्यः सर्वस्याः सर्वा-
भ्यः सर्वस्याः सर्वयोः सर्वासां सर्वस्यां
सर्वयोः सर्वासु हे सर्वे हे सर्वाः बुद्धिसि
बुद्धिः बुद्धी बुध्दयः बुद्धिं बुद्धी बुद्धीः
बुध्या बुद्धिभ्यां बुद्धिभिः बुध्यै- बुध्दये

बुध्दिभ्यां बुध्दिभ्यः बुध्दे:- बुध्याः बुध्भ्यिां बुध्दिभ्यः बुध्याः बुध्दे: बुध्योः बुध्दीनां बुध्यां। बुध्दौ बुध्योः बुध्दिषु हे बुध्दे हे बुद्धी हे बुध्दयः एवं मतिभूति कांति गति रुचि धेनु रज्जु इत्या०

धेनु सि धेनुः धेनू धेनवः धेनुं धेनू धेनून् धेन्वा धेनुभ्यां इत्या० नदीसि = (५९. ह मे पःसेः) = नदी नद्यौ नद्यः नदीं नद्यौ नदीः नद्या नदीभ्याम् नदीभिः नद्यै नदीभ्याम् नदीभ्यः नद्याः नदीभ्यां नदीभ्यः नद्याः नद्याः नदीनाम् नद्यां नद्योः नदीषु हे नदि हे नद्यौ हे नद्यः एवं गौरी गौतमी मही सरस्वती कुमारी इंद्राणी इत्यादि० लक्ष्मी सि = लक्ष्मीः लक्ष्म्यौ लक्ष्म्यः लक्ष्मीं लक्ष्म्यौ लक्ष्मीः लक्ष्म्या हे लक्ष्मि इत्यादि० एवंथी ह्री तरी तंत्री तेमज भू भ्रू थाय छे स्त्री सि = स्त्री स्त्रियौ स्त्रियः + यम् स्त्रियौ स्त्रीः स्त्रिया स्त्रिभ्याम् इत्यादि० लक्ष्मी अवी तरी तंत्री धी ह्री श्री एटला शब्दनी सिनो लोप नथी थतो.

श्री: श्रियौ श्रिय: इत्यादि• मातृ सि = माता मातरौ+ र: + रं + रौ मातृ: शेषं पितृ शब्द जेऊं गो सि = गौ: गावौ गाव: इत्या० नौ सि = नौ: नावौ नाव: शेषं ग्लौ शब्द जेवूं.

इति स्त्रिलिंग:

अथ स्वरान्तनपुसकलिंग:

कुलसि

६४ स्वमन्यादेश्च

नपुसकलिंगमा अ थी पाछळ सि अम् अम् थाय पण अन्यादिक शब्दनी पाछळ बेऊनी श्लु थाय अन्यत्र लोप थाय = कुलं कुल औ = (सू. ५० औयुवा) कुले कुलजस् =

६५ जसशसोः शिः

नपुसकलिंगथी पाछळ जस् शस् शि था य कुलशि =

---

१ गुरुस्वरनो तथा श युक्त आदेश बधानो थाय.

६६ नुनयमोवा

विनायमान्त नपुंसक ने नुम् आगम थाय शिपरे तथा नाम्यंतने पण थाय स्वर परे कुलनूशि.

६७ नइनांशौच

नान्त उपधानो दीर्घ थाय शिपरे ने धि मुकीने पांच वचन परे तथा नामि परे ने इन, हन, पूपन, अर्य मन, एमनी उपधानो पण दीर्घ थाय सितथा शिपरे = कुलानि पुनरपि कुलं कुले कुलानि शेषं देव शब्द जेवूं एवं मूल फल पत्र पुष्प कुंड कुटंबादिक शब्द थायछे.

सर्वसि = सर्वं

सर्वे सर्वाणि पुनरपि सर्वं सर्वे सर्वाणि शेषं पुंलिंगना सर्व जेवूं

अन्यसि—

६८ बावसाने

= (सू. ६४ स्त्वमन्यादेश्च)

छेला झसना ज ब थाय च प पग विक

---

२ मयुक्त आगम छेला स्वरथी पाछळ थाय छे.

ल्पथी थाय = अन्यद्-अन्यत् अन्ये अन्यानि पुनरपि अन्यत्+द् अन्ये अन्यानि शेषं सर्ववत्

आस्थासि (सू ६४ श्त्वमन्यादेश्च)

अस्थि अस्थि औ (सू. ६६ नुमयमा वा) अस्थिनी अस्थीनि पुनरपि अस्थि अस्थिनी अस्थीनि अस्थिटा =

६०. अचास्थ्यां शसादौ

अस्थि आदिक शब्दोने नुमनु आगम थाय शसा दिस्वरपरे ने छली इनी अ थाय अस्थन आ

७० वेङ्योरम्वु तश्च

मान्तनी उपवानी अ लोप थाय शसा- दिस्वरपरे तद्धितमां ई ए ई परे पण म बना संयोगथी पाछळ न थाय ने इ ङि परे विकल्पथी थाय.

अस्था अस्थिभ्यां अस्थिभीः अस्थ्ने अस्थिभ्यां अस्थिभ्यः अस्थ्नः अस्थिभ्यां अस्थिभ्यः अस्थ्नः अस्थानि अस्थ्नोः अस्थिषु

हे[1] अस्थि हे अस्थे हे अस्थिनी इत्यादि.

---

१ नपुंसकमां इ उ ऋ नो गुण विकल्पथी थाय धिपरे

७१
नपुंसकस्य

एवं सक्थि अक्षि दधि इत्यादि वारि वारिणी वारीणी पुनरपि इत्यादि० ग्रामणी सि

नपुंसकमां ह्रस्व थाय विभाक्ति परे = ग्रामणि ग्रामणिना ग्रामणीनि इत्यादि. उपगोसि उपगु उपगुनी उपगूनिइत्या० मधु मधुनी मधूनि इत्यादि०
कर्तृ कर्तृणी कर्तृणि इत्यादि

इति स्वरान्त नपुंसकलिंग:

अथहसांत पुल्लिंग:

अनडुह्सि

= अनड्वान् अनड्वाहौ अनड्वाह: अनड्वाहं अनड्वाहौ अनडुह: अनडुहा अनडुभ्याम् अनडुद्भि: अनडुहे अनडुभ्याम् अनडुभ्य:अनडुह: अनडुद्भ्याम् अनडुभ्वद्भ्या

---

२ संध्य क्षरोने ह्रस्व करवामां इ उ थाय.

---

१ अनडुह् निपात्य:

अनडुहः अनडुहोः अनडुहां अनडुहि
अनडुहोः अनडुत्सु हे अनड्वन् हे अनड्वा-
हौ हे अनड्वाहः गोदुह्सि

७२
दादे र्घो-
र्घोवा

धातुनी हनी ढ थाय तथा द आदि
धातुनी हनी घ थाय ने द्रुहादि ोनी हनो
घ ढ बेऊ थाय रस रे तथा पदांतमां

२ द्रुह मुह ष्णुह स्निह आटला द्रुहा
दिक छे.

गोदुघ्सि

७३
आदिज-
बांस्ध्वोः

झभांत धातुना आदिनाजब् झभ
थाय धातुना झस पे नामना रस परे तथा
पदांतमां = गोधुघ्सि (वावसाने)
गोधुक् गोधुग् गोदुहौ गोदुहः गोदुहा
गोधुग्भ्याम् गोधुग्भिः गोदुहे गोधुग्भ्याम्
गोधुग्भ्यः गोदुहः गोधुग्भ्याम् गोधुग्भ्यः
गोदुहः गोदुहोः गोदुहां गोदुहि
गोदुहोः = गोदुह् सुप् = गोधुक्सु =

गोधुक्षु = गोधुक्षु हे गोधुक् हेगो- धुग् हे गोदुहौ हे गोदुहः मधुलिहसि = मधुलिट् + सु मधुलिहौ मधुलिहः-हं-हौ -हः-हा इ० मित्रध्रुक्-ग्-ट्-ड् मित्र- द्रुहौ-हः-हं-हौ इ० भारवाहसि = भार- वाट्-ड्-हौ-हः-हं-हौ भारवाहशम् भारौहः[2]-हा-ड्भ्यां ड्भिः-हें इ० तुरासा- हसि = तुरासाढ् = तुराषाट्-ड्

तुरासाहौ-हः-हं-हौ-हः-हा-ड्भ्याम् ड्भिः = तुरासाहे इ०। चतुर्जस चत्वार = चतुर = चतुर्भिः = चतुर्भ्याः = चतुर्णां चतुर्षु पंचनजस् पंच पंच पंचभिः-भ्यः- पंचानां पंचसु एवं सप्तन नवन् दसन् इ० अष्टन् जस अष्टौ अष्ट अष्टौ अष्ट अष्टाभि अष्टभि = अष्टभ्यः अष्टाभ्यः अष्टाणाम्

---

१ क् ष् ना संयोगमा क्ष अक्षर थाय छे माटे थवाथी सनीष् थाय.

२ वाहशब्दनो वाऔ थाय शसादि सर्व- परे

अष्टसु अष्टासु षषजस् षट्-षड्
षड्भिः = षड्भ्यः = षण्णां षट्सु.

संख्या वाचक शब्द निपातथी सिद्ध
थाय छे.

हसांतः पु.

राजन्सि (६७ न इनां शौच) राजा-
न्सि (६९ हसे पक्षेः) राजान्

७४ श्वन्नान

नामनी न्नो लोपश थाय रस परे तथा पदां
तमा पण आगम वाळी नकारनो लोपश
न थाय राजा राजानौ राजानः राजानं
राजानौ राजान् शस् (७० वेङ्यो रंव-
तश्च) राज्न् शस् (२० सश्च) राज्ञ्[1]
शस् राज्ञः राज्ञा राजभ्याम् राजभिः
राज्ञे राजभ्याम्-भ्यः राज्ञः राजभ्य म्
राजभ्यः =
राज्ञः राज्ञोः राज्ञां राजनि- राज्ञि राजसु
हे राजन् हे राजानौ हे राजानः एवं यज्वन्
आत्मन् सुधर्मन् इ० आत्मन्सि आत्मा
आत्मानौ नः- नं- नौ आत्मना आत्मभ्यां

---

1 ज्ञ् ञूना संयोगमा ज्ञ. अक्षर थाय छे

आत्माभिः इ० श्वन् सि श्वा श्वानौ श्वानः
श्वानम् श्वानौ श्वन् शस्

७५
स्वादेश्च

श्वन् युवन् मघवन् वसु एटलानी वनो
उ थाय शसादि स्वरपरे = शुनः
+ना श्वभ्याम् श्वभिः इ०

युवन् सि = युवा युवानौ+नः+ नं
+ नौ यूनः यूना युवभ्यां युवाभिः इ०
मघवान् सि मघवा मघवानौ+ नः+ नं मघोनः
ना इ० मघवत् मघवत् सि

७६
उतोनुम्

उकार ऋकार इत्वाला शब्दनी नुमनु
आगम होय पुंल्लिंगमा पांच वचन परे

७७
संयोगांत
स्यलोपः

मघवन्त् सि संयोग अंतवाले व्यंजन
ना लोप थाय रस परे अथवा पदांतमां (६०
नइनां शौच) मघवान् मघवन्तौ मघवन्तः
+न्तं न्तौ मघवतः+ता मघवद्भ्याम्
मघः मघवद्भिः मघवतः+ तः तो इ०

हसांतः पुल्लिंगः

पथिन् सि

७८ इतोऽत्

= पथ्यादिकोनी टि आ थाय सिपरे तथा इ आ थाय पांच वचन परे = पथा सि

७९ थोन्थ्

पथ्यादिकोनी थने न्थ् थाय पांच वचनपरे = पन्थासि पंथाः पंथानौ +नः+नं+नौ पथिन् शस्.

८० पथांटेः

पथ्यादिकनी टिना लोप थाय शसादि स्वरपर पथः पथा पथिभ्याम्+भिः पथे इ० एवं मथिन् ऋभुक्षिन् सिद्ध थाय छे दंडिन् सि (६७ न इ नांशौच) दंडी दंडिनौ दंडिनः-ना दंडिभ्याम् इ.

वृत्रहन् सि = वृत्रहा वृत्रहणौ वृत्रहणः णं वृत्रहन् शस् (७०वैङ्यो रंवतश्च)

८१ हनोघ्न

हनोघ्न हन धातनी हनो घ थाय नपरे पण वचमां दूसरा अक्षर होय तो ञिति णि तपरे थाय वृत्रघ्नः.

हसांतः पु०

८२ : हन्तेरत्पूर्वस्य.

हन धातुनी न्‌ना ण थाय ज्यारे ननि पहिले अ होय वृत्रघ्ना वृत्रहभ्यां वृत्रहभिः

इ० पूषन् सि पूषा पूषणौ+णः इ० इदम्[1] सि = अयम् इमौ इमे+मं इमौ इमान् अनेन आभ्यां एभिः अस्मै आभ्यां एभ्यः अस्मात् आभ्यां एभ्यः अस्य अनयेः एषाम् अस्मिन् अनयोः

एषु एन एतं एतौ नतौ एतान् एनोन् एनेन अनेन एनयोः एनयोः किमसि (५८ त्वदादेष्टरः) कः कौ के कं कौ कान् कन् काभ्याम्—कैः कस्मिन् केषु त्यत्‌सि (५१ त्यदा देष्टरः

८३ स्तः

त्यदा दिकनी तूनि सा थाय सिपरे स्य = त्यौ इ० तत्‌सि = सःतौः तेतं तौ तान् तन् ताभ्यांतैः तस्मै ताभ्यांते भ्यः तस्मात् ताभ्याम् तेभ्यः तस्य तयोः तेषाम् तस्मिन् तयोः तेषुयः यौ ये यं यौ यान् येन या भ्याम्

---

१ इदम् निपात सिद्धम्.

हसातः पु,

यैः यस्मै याभ्याम् येभ्यः यस्मात् याभ्याम् येभ्यः यस्य ययोः येषाम् यस्मिन् ययोः

येषु एतत्सि = एषः एतौ एते इ० एतम् एनम् एतौ एनौ एतान् इ० मरुत्सि मरुत्–मरुद् मरुतौ–तः–तं–तौ-तः– ता-मरुभ्याम् इ०

महत्सि = (वितोनुम्)

८४ स महतश्चे

न अन्तवाला तथा स् अन्तनो तथा महत ने अप्शब्दनी उप धानो दीर्घ पांच वचनपरे ने शिपरे तथा अत्तुने अस अन्तवालाना सिपरे च थाय (७८ संयोगान्तस्य०) महान् महन्तौ महान्तः+न्तं+तौ महतः+ता महद्भ्यां + द्भिः इ० भवान् भवन्तौ + न्तः + न्तं + भवतः+ता इ०

सम्राज् सि =

८५ छशषराजादेर्डः ४

छ् ष् श् अन्तवाले तथा राज यज स्रज् मृज भ्राज् आदिके ना अंतना व्यंजननी

ड् थाय धातुना झ सपरे नामना र स परे तथा पदान्तमा संभ्राट्–ड् संभ्राजौ–जः–जं–जौ–जः–जा संभ्राड् भ्याम् इ० एवं विरा जादिक होय दोषसि=

८६ दोषांरः

दोष सजुष आशिष् हविष् इत्यादिको· नी ष् र् थाय र स परे तथा पदांतमां दोः दोषौ–षः–षं–षौ–षः दोषः दोष्णा दो-र्भ्याम् दोर्भिः दोषि दोषाणि दोःषु दोष्षु हेदोः इ०

पुंससि =

८७ पुन्सापुमान्श्च.

पुंस्नो पुमन्स् थाय पांच वचन परे ने पंसनी सनीक् थाय सुप् परे असंभवार्थ मां पुमान् पुमान्सौ+न्सः–न्सं+सौपुन्सः पुन्सा. पुंभ्यं-भिः+न्से+न्सः+न्सो:+न्सां पुन्सि पुंस् सुपु पुं क् सु प्=पुङ क्षु हे पुमन् हे पुमान्सौ हे पुमान्सः

दोष शब्दना पछी अन विकल्पथी थाय शसादि स्वर परे बाकी निपातथी थाय.

हसांतःपुः

(७७ व्रिनोनुम) विद्वस् सि = (उ अन्त वालो छे) विद्वान्ः+न् सौन्सः इ०

८८
वसांरसे.

वसु स्त्रंसु ध्वंस भ्रंस् एमना अन्ताक्षरनी द् थाय रसे परं पदान्तेष विद्वद्भ्यां विद्वद्भिः विदुषे-षोः-षां विद्वत्सु हे विद्वन्-हे विद्वान्सौ-न्सः भवत् भवान् भवन्तौ+न्तः+न्तं भवतः हे भवन् इ० सुवचस् सि=सुपचाः-सुवच सौ-सः-सं:-सा सुवचोभ्यां-भिः इ०

चन्द्रमस्सि=चंद्रमाः चन्द्रमसौ-सः- सा-चन्द्रमोभ्यां चन्द्रमसु हे चन्द्रमः इ० मास्-सि=माः मासौ सः-सा मोभ्यां माः सु हे माः इ० एवंच्च स्थिवस् आदिक थाय छे उशनस सि=

८९
उशनसाम.

उसनस् पुरुदंतसस् अने हस् आटला नी सिडा थाय उशना उशन+सौ+सः+सं+सा इ० हे उशन, हे उशनः नन् अदस् सि=असौ अमू अमी अमुम् अमू अमून्

---

१ अदस इदम निनाते सिद्धाः

अमुना अमूभ्यां अमीभिः अमुष्मै अमीभ्यः अमुष्मात् अमुष्य अमुयोः अमीषाम् अमुष्मिन् अमीषु अमुकः अमुकौ-कः- कं कौ केन अमुकाभ्यां इ०

इतिहसान्तः पुलिंगः

अथ हसान्त स्त्रिलिंगः

उपानह् सि=

९० नहोधः

नह शब्दनी ह् नी ध् थाय धातुना झस परे नामनो रस परे अथवा पदान्तमां (वावसाने) उपानत् + द् + उपानहौ उपान हः+हं–हः उपान हा उपान द्भ्यां+द्भिः ऊपान हां+हि+त्सु हे उपानत् हे उपद् इ० दिवसि = द्यौः[1] दिवौ दिवः+बा+द्युभ्यां द्युभिः +षु हे द्यौः इ० त्रि· सि = तिस्रः तिसृभिः+भ्यः तिसृणां तिसृषु चतुर सि = चतस्रः चतसृभिः इ०

स्त्रीलिंगः

९१ द्वोर्विंइसे.

गिरासि =

धातुनी इ, उना दीर्घ थाय ह सना पहिलानी र् व् पाछल होय तो गीः गिरौ

गिरः+रं+रा गीर्भ्यां गीर्भिः गिरे गीर्भ्यां गिरां+रि गीःसु हेगीः एवं पुर धुर आदिकं साधो पुरसि+पूःपुरौ+रः+रंइ० घूः धुरौ+रंइ० समिध् सि=समित् समिद्+धौ+धः+धं धा समिद्भ्यां द्भिः इ० ककुप्सि=ककुब्+प् -भौ-भः-भा ककुब्भ्यां ब्भिः हे ककुप्+ब् त्यद् सि (९४ त्यदादेष्टेरः स्यादौ) स्या त्ये त्याः इ० तत्सि (८९ स्तः)=साते ताः तां-ताः तया ताभ्यां ताभिः (६३ येटोश्च) तस्यै, तस्याः तयोः तासां तस्यां तासु एतत् सि=एषा एते एताः एतां एतय+ एनया एतयोः+एनयोः इ०

स्त्रीलिंगः

इदम् ।सि= इयं इमे इमाः+मां एनां इमे एने इमाः एनाः अनया आभ्यां अभिः अस्याःआस्याम्+भ्यः अस्याः अनयोःएनयो आभ्यां आसु अदस्।सि=असौ अमू अमूः अमूम्+मः अमुया अमूभ्यां+ भिः अमुष्य अमुयोः अमूषाम् अमुष्याम् अमूषु त्वच ।सि=(६८ वावसाने)

९२
चोःकुः

च वर्गणी क वर्ग थाय धातु नोझ. स परे नाम नौर स परे किंवा पदान्त मां वा क्+ ग् वाचौ+ चः+ चं+ चा वा ग्भ्यां+ भिः हेवाक्+ ग् एवं त्वच् आ दि शब्द सिद्धथाय छे अप् जस (८४ न्समहतश्च) आपः

९३
भिद्पा

अप् आदि शब्दनी प् द् थाय न्नपरे अद्भिः अप्सु हे आपः

---

१ आप, वहुवचन छे

९४
दिशांक:

दिश सि=

दिश् विश् स्पृश् दृश् मृश् स्रज् ऋ त्विज् ददक्ष उ ष्णिह् अञ्च् अ जज् क्रुञ्च् एटलाना छेला व्यंजननी क् थाय रस परे तथा पदान्तमां दिक् ग् दिशौ+ शः+शं+शा दिग्भिः दिशा दाशी दिक्षु हे दिक् ग् स्रज् सि=स्रक्+ग्स्रजौ-जा इ० विष् सि= (८७ छशेव राजादेर्डः) त्विट् + ड् षौ-षः- त्विड्भिः त्विपांषि• त्विट्सु आशिषासि=अशीः आशियौ - षः आशीर्भ्यां र्भिः + आशिषि आशीष्युहे आशीः इ० इतिहमान्तःस्त्रीलिंगः

अथ हसान्त नपुंसकलिंगः

वारासि=(सू० ३४शत्वमन्यादेश्व)वाः(९० औयृषा) वारी, वारि पुनः वाः वारी, वारि

---

१ सजुष् आशिषनी उपधा दिर्घ थाय रसपरे पदांतेच.

वारा, वार्भ्यां वार्भिः वार्षु हेवाः इ० चतुर[1] जस् चत्वारि+रि चतुर्भिः चतुर्णां चतुर्षु— अहन्[2] सि=अहः अहनी अहानि पुनः ३ अन्हा, अहोभ्यां+भ्यः+भिः अन्हि+हनि अहस्सुः+सु हे अहः इ० ब्रह्मन् सि= ब्रह्म ब्रह्मणी+ह्माणि पुनः ३ ब्रह्मणा ब्रह्मभ्यां+भिः ब्रह्मणां ब्रह्मसु हे ब्रह्मन् एमच चर्म्मन् वर्मन् कर्मन् शर्मन् आदि सिद्ध थाय छे त्यद् सि=(सू० ६४ त्वमन्या- देश्च त्यत् द् त्ये त्यानि पुनः शेषं सर्ववत् तत् सि=तत्+द् तेतानि इ०

यत्+द् ये यानि पुनः ३ एतत्+द् एते संतानि इं० किम् सि=किम् केकानि इ० ३ इदम् इमे इमानि इदम् इ० जगत्=द् जगती जगन्ति पुनः ३ महत्+ द् महीती महत् जस् (८६ न्सम्महतश्च)

१—२ चतुरने अहन् निपातसिद्ध छ.

महन्ति पुनः ३ पयस् सि=पयः पयसी, पयांसिपु० तेजस्-सि तेजः तेजसी तेजांसि

अदस्[२] सि=अदः अमुनी अमूनिपुनः ३ अमुना अमूभ्यां अमीभिः अमुष्मै अमूभ्यां अमीभ्यः अमुष्य अमुयोः अमीषां अमुष्मिन् अमुयोः अमीषु इतिहसान्त नपन्सकलिंगः

अथ युष्मत्–अस्मत्.

विभक्ति वचन.	
	सर्वनाम=युष्मद् एटले तेम अस्मत्=हूं युष्मत् अस्मत् युष्मत सि अस्मत सि=त्वं–
प्र० १	अहं=त्वं लिखसि अहं लिखामि
,, २	आवां. युवां लिखथः आवां लिखावः
,, ३	ययुं–वयं. ययूंलि खथ वयं लिखामः

निपातथीसिध छे. नपुंसकमा न् विकल्पर्थ। लोप होय धिपरे जेम हे ब्रह्मन्।न्ह्य हे वर्मन+र्म.

द्वि.	१	त्वां मां त्वा मा	राजा त्वां+त्वा, ददाति. मां+ मा देहि.
,,	२	युवां आवां वः नौ	युवां+वां ददामि. आवां+नौ देहि.
,,	३	युष्मान् अस्मान् वः नः	युष्मान् = वः पातु. अस्मान् = नः ,,
त्रि०	१	त्वया मया त्वया शिवः पूजितःमया देवश्च	
,,	२	युवाभ्यां आवाभ्यां=युवाभ्यां धनंदत्तं. आवाभ्यां दृष्टं.	
,,	३	युष्माभिः—अस्माभिः युष्माभिः अस्माभिर्वा पठितं.	
च०	१	तुभ्यं मह्यं ते मे	तुभ्यं+ते. मह्यं+मे सदा ष्यति
,,	२	युवाभ्यां आवाभ्यां वां नौ	युवाभ्यां+वां आवाभ्यां नौ दत्तं
,,	३	युष्मभ्यं अस्मभ्यं वः नः	युष्मभ्यं+वः अस्मभ्यं नः ददाति

पं० १	त्वत् मत् त्वत्–मत् धनं गृहीतम्
,, २	युवाभ्यां आवाभ्यां युवाभ्यां आवाभ्यां वा
,, ३	युष्मत् अस्मत् युष्मत्–अस्मत् वापठितं
ष० १	तव मम ते मे तव+ते गृहं मम+मे पुत्रः
,, २	युवयोः आवयोः वां नौ } युवयोः+वां पत्रं आव- योः नौवा
,, ३	युष्माकं अस्माकं वः नः } युष्माकं+वः अस्माकं = नः गृहं
स० १	त्वयि मयि त्वयि किंवा मयि हरिरस्ति.
,, २	युवयोः आवयोः युवयोः आवयोः } दुःख-
,, ३	युष्मासु अस्मासु युष्मासु अस्मासु } नास्ति

पणा अन्ययना अर्थ देखाडे छे.

अन्यय	अर्थ	अन्यय	अर्थ
च....	ने, पण	ह्यस्	गई काल्हे
वा....	ने, बीजू	श्वः	आवती काल्हे
ह....	प्रशिद्ध	उच्चैः	उच्च स्वरथी
अह....	हाय	नीचैः	नीच स्वरथी
एव....	निश्चै पण	स्वर	स्वर्ग पाछल
एवं....	एम आरीते	अन्तर	वचमां मध्य
नूनं....	निश्चै	प्रातः	सवार
पृथक्	भिन्न	पुनः	पछी फरथी
विना	विना वगेर	भूयः	वारंवार फरथी
नाना	तरहवार	अहो	आश्चर्यमां
स्वास्ति	कल्याण	आहो	,,
अस्ति	छे	किंशित्	प्रश्नमां
दोषा	रात्रि	सह	साथे, संघाते
मृषा	असत्य	नमः	नमस्कार
मिथ्या	,,	ऋत्ते	विना
मिथस	आपसमां	अन्तरेण	,, वचमा विना
अथ	हवे बीजू	अन्तरा	,,
अथो	,,		

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
पूर्वतः	पूर्वथी पहेला	पूर्वेद्युः	गईकाल्हे
सर्वत्तः	सोथी	परेद्युः	आवात्तिकाल्हे
पुरस्तात्	पहिलाथी	आशु--	जल्दी, वहेला
अधस्तात्	खाली	सीघ्रं	,,
पुरस्त्तात्त्	पछी	सपदि	,,
आहि	दुर	झटित्ति	,,
कश्चित्	कोई	तूर्णं	,,
क्वचित्	कई	यर्हि	ज्यारे
कश्चन	कोई	तर्हि	तारे
सद्यः	जल्दी		
अद्य	हवे		
सपदि	वहेला		

अधुना	हवे		
इदानीं	,,		
सांप्रतं	,,		
संप्रति			

अथ उपसर्गाः

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग	अर्थ
प्र..	सारीपेठे, वहु	उत्	उपर
परा..	अतिअन्त	अभि	सौप्रकार
सं..	सारीरीते, खूब	प्रति ..	ते उपर
अनु	पश्चात्	उप	पास सौथी
अव	न्यून, कम	आविः	प्रगट, जाहिर
निर्..	ओछा		
निः	विना,		

दुः	"
दुर्	कठिण, नष्ट
वि	विशेष
आ	सारीपटे, विशेष
नि	नित्य, निश्चे
अधि	वधारे
अपि	भी, पण
अति	अत्यन्त

उपसर्गो धातुनि पाछल लगाडवाथी धातुना अर्थ बदली जाय इति उपसर्गाः

स्त्रीप्रत्ययः

हवे स्त्रीलिंगी शब्द समजवामाटे शब्दोमां प्रत्यय लगाडी छे

प्रत्यय आप्	जाया, माया, श्रद्धा मेधा वाचा, निशा, दिशा सूर्या, सुमुखा, मृगाक्षा
इक काप्	कारिका, पाचिका, पाठिका वणिका, नादिका, नदीका नौका, वेर्णाका
ईप	दंडिनी, कारिणी, शूद्री मृगाक्षी सुमुखी, प्राची, प्रतीची, तन्वी, तन्वंगी
ति	युवतिः
आनीप	इन्द्राणी, ब्रह्माणी, रुद्राणी, भवानी

कारकम्.

एटले शब्दमा विभक्तियो लगाडी कर्ता कर्म, करण विगेरे देखाडी छे

कर्ता	प्रथमा	= राजा रक्षति
कर्म	द्वितिया	रणं पश्यति
करण	त्रितीया	शरेणहन्ति
संप्रदाने	चतुर्थी	विप्रायददाति
अपादाने	पंचमी	गृहात् गच्छति
संबंधे	षष्टी	शिवस्यपूजा
आधारे	सप्तमी	मुखे-ताम्बूलम्
संबोधने	प्रथमा	हे जगदीश्वर।

ए शब्दोनी साथे	हवे विशेष २ अर्थमां कारकनो भेद थाय छे	
अभि	द्वितीया	अभितो देवं परिक्रामति
उपरि	,,....	उपरि २ वृक्षंणाक्षिण:
प्रति }	द्वितिया	प्रत्येकं उपपदिश
परित: }		परित:तीर्थंभ्रमति
विना }	पंचमी+	विद्यां विना व्यर्थम्
ऋते }	द्वितीया	
अधि	सप्तमी ७ द्वि २	अधिगच्छति स्वर्गं
सह }	... ...	गुरुणासहगच्छ
सदृशं }	....	शिवेन सदृशा हरि:

साकं साद्धं सम	त्रितीया	शालेन साकंविद्याविम्नाति, पुत्रेण साद्धंगच्छ समं मित्रेण पठ
रुचि अर्थमां	चतुर्थी	हरयेरोचते भक्तिः
अन्य, इतर,	पञ्चमी	पुत्रादन्योकः त्रायेत
स्वामी पति	षष्ठी सप्तमी	वृक्षाणां स्वामी गृहाणांपति गोषुपति
स्मरण अर्थमां	षष्ठी द्वितीया	गुरुंस्मरति, मातुःस्मरति
हेतुमां	त्रितीया	धनहेतुः नमति–धन हेतुना पठति

भयमां	पंचमी	व्याघ्राद् बिभेति
आङ्ना योगमां	पंचमी	आसमुद्राद् गच्छम्
आशीर्वादमां	चतुर्थी	साधवे शुभंभूयात्
निमित्त	सप्तमी	दुग्धेगां रक्षति
विषये	सप्तमी	व्याकरणेचतुरः
द्विकर्मक धातुमां	द्वितीया	शिष्यं व्याकरण अध्यापयति
क्रियाविशेषणमां	"	मार.मयति

इति कारकम्

समासः

अनेक पदोनी विभक्तिओने काढी मूकी एक पद करवुं आ काम वाळी

१	अव्ययीभावसमास	जेनी पहिले अव्यय होय ते
२	तत्पुरुष	जेमां द्वितीया विगेरेथी कोई पण विभक्ति पहिले पदमां होय ते.
३	द्वंद्व समास	जेनी व्याख्या, च, लगाडवाथी थाय ते
४	बहुव्रीहिः	जेना अर्थ त्रीजा पुरुषमां जाय ते.
५	कर्मधारय.	जेनां बेउ पद समान अर्थ दिखाडे ते
६	द्विगु, समासः	जेना पहिले संख्या होय ते.

ए मुख्य ६ समास छे हवे एमनी व्याख्या

जोवो जेम

अव्ययी भाव:	शक्त्यानुसारंकृतं = यथाशक्ति
,,	शमुद्रादारभ्य यत् = तत् आशमुद्रं
तत्पुरुष	ग्रामंप्राप्त: = ग्रामप्राप्त:
,,	बाणेनहत्त: = बाणहत्त:
,,	भोजनायशाकं = भोजनशाकं
,,	गुरो: सेवा = गुरु सेवा
,,	ग्राम णामधीश: = ग्रामाधीश:
,,	संग्राम षशूर: = संग्रामशूर:
द्वंद्व:	रामश्चकृष्णश्च = रामकृष्णौ
,,	विद्याच उद्योगंच = विद्योद्योगम्
,,	फलं च मूलं च पुष्पाणि च = फल मूल पुष्प + प्पाणिबा

„	परश्च परश्च = परस्प म्[1]
„	अन्यश्च अन्यश्च = अन्योऽन्यम्
बहुव्रीहि	बहु धनं यस्यसः = बहु धनः
„	लम्बौकर्णौ यस्यसः लम्बकर्णः
„	चन्द्रः शेखरे यस्यसः = चन्द्रशेखरः
„....	दुष्टामेधा यस्यसः = दुर्मेधः
....	भूर्जाया यस्यसः = भूजानिः
„....	घृतस्य गंध इवगंधिर्यस्यसः = घृतगंधिः
„....	पद्मस्य गंध इवगंधिर्यस्यसः = पद्मगंधिः
कर्मधारयः	विद्वान् चा सौयातिश्च = विद्वद्यतिः
„....	ईषत् उष्णं = कोष्णम्[2]
द्विगुः....	पंचानां पुस्तकानां समाहारः = पंच पुस्तकं

---

१ कई समासमां पण विभक्तिनो लोप नथी थतो.

कर्मधारय: देव पूज कश्चा सौ ब्राह्मणः = देव ब्राह्मण:

द्वंद्व:- माता च पिता च = पितरौ, । दुहिता च पुत्रश्च पुत्रौ.

इति समास:

१-२-३-४ निपातसिद्धा:

तद्धितम्.

शब्दमां प्रत्यय लगाडवाथी बापना बेटा विगेरे थई जाय ते

अपत्यर्थमां	वसिष्टस्य आपत्यं पुमान् = कृष्णस्य आपत्यं पुमान्	अणं इण	= वासिष्ठः कार्ष्णिः
,,	गोतमस्य आपत्यं ,,	,,	= गौतमिः
,,	सोमस्य. आपत्यं ,,	यण	सौम्यः
,,	चन्द्रस्य अयं ,,	अयन	चांद्रायणः
,,	अत्रेरपत्यं ,,	एयण	आत्रेयः
,,	गंगायाः अपत्यं ,,	,,	गांगेयः
,,	पितृष्वसुः = ,,	णीय	=पैतृष्वस्रीयः
	पितुः पिता ,,	डामह	=पितामहः
	मातुः पिता ,,	,,	मातामहः

देवताअर्थमां	इन्द्रोदेवता यस्यतत्	ण	ऐन्द्रम्
इदमर्थमां	सोमस्य इदम्	यण	सौम्यम्
भवअर्थे	कुलेभवम्	यण	कौल्यम्
इदमर्थे	स्वस्यइदम्	ईयण	स्वकीयम्
,,	परस्य ,,	,,	परकीयम्

इतितद्धितम, पूर्वार्द्धम समाप्तं.

